M.A - III SEMESTER Paper-10 01 A8

शौरसेनी प्राकृत साहित्य

इकाई (2) प्रवचनसार आचार्य कुन्दकुन्द (प्रथमज्ञानाधिकार)

Q1. प्रवचनसार आचार्य कुन्दकुन्द प्रथम ज्ञानाधिकार का संक्षेप विवेचन करें।

Ans. कुन्दकुन्द की रचनाएँ प्राकृत साहित्य की उत्तम रचना में प्रमुख स्थान है। इनकी सभी रचनाएँ शौरसेनी प्राकृत में है। प्रवचनसार कुन्दकुन्द आचार्य के प्रथम रचना कुन्दकुन्द आचार्य द्वारा के प्रथम अधिकार का विवेचन अमृतचन्द्र द्वारा और जयसेनाचार्य की संस्कृत टीकाओं सहित रायचन्द्र जैन शास्त्र ने किया है।

प्रथम ज्ञानाधिकार = ज्ञानाधिकार में आत्मा और ज्ञान का एकत्व और अन्यत्व, सर्वज्ञ की सिद्धि, इन्द्रिय और अतीन्द्रिय सुख, शुभ, अशुभ और मोहक्षय आदि का प्ररूपण यह प्रथम ज्ञानाधिकार का प्रथम अधिकार का प्ररूपण है।

इस ग्रन्थ के ज्ञानाधिकार का प्रारम्भ गाथा पंचक से होता है। प्रथम गाथा में धर्मतीर्थ के कर्ता वर्द्धमान को दूसरी गाथा में शेष तीर्थंकरों को तीसरी गाथा में मनुष्य लोक में वर्तमान अरहन्तों को नमस्कार किया गया है।

इस ग्रन्थ की रचना की ऐसा प्रतीत होता है दर्शन-ज्ञान प्रधान चारित्र से मोक्ष की प्राप्ति होती है चारित्र ही धर्म है और धर्म साम्यभाव का नाम है तथा मोह और क्षोभ से रहित आत्मा के परिणाम को साम्य कहते हैं। अतः ग्रन्थकार ने वीतराग चारित्र रूप साम्यभाव को धर्म कहा है।

जीव के भाव तीन प्रकार के बतलाये गये हैं - शुभ

OPPO A53 · ©ADITYA
2021/06/26 11:09

अशुभ और शुद्ध। धर्माचरण करनेवाली आत्मा यदि शुभ भाव रखती है तो उसे मोक्ष मिलता है और यदि शुभ भाव रखती है तो उसे स्वर्ग प्राप्त होता है और यदि अशुभ भाव रखती है तो संसार में दुःख उठाना पड़ता है।

शुद्धोपयोगी का फल उस अनुपम अनन्त अविनाशी सुख की प्राप्ति है जो विषयों से प्राप्त न होकर आत्मा से ही उत्पन्न होता है तथा वह शुद्धोपयोगी ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अन्तराय और मोहनीय कर्मों को नष्ट करके सर्वज्ञ, सर्वदर्शी हो जाता है। उसे केवल ज्ञानी कहते हैं। उसके शारीरिक सुख दुःख नहीं होते हैं।

उपनिषद में आत्मा को सर्वगत (व्यापक) कहा गया है। कुन्द कुन्द ने भी उसे ज्ञान रूप से व्यापक बतलाते हुए लिखा है— आत्मा ज्ञान के बराबर है और ज्ञान ज्ञेयों के बराबर है। ज्ञेय समस्त लोकालोक है। अतः ज्ञान सर्वगत है। तो आत्मा ज्ञान से बड़ा हुआ या छोटा हुआ। यदि आत्मा ज्ञान से छोटा है तो आत्मा के बिना अचेतन ज्ञान पदार्थों को कैसे जान सकता है। यदि आत्मा ज्ञान से बड़ा है तो ज्ञान के बिना आत्मा कैसे जान सकता है।

इसका मतलब यह है कि ज्ञान अर्थों के पास जाता है या अर्थ ज्ञान में आ जाते हैं। जैसे— चक्षु रूप से आविष्ट नहीं होती और न रूप ही चक्षु में प्रविष्ट होता है। फिर भी चक्षु रूप को जानती है। वैसे ही ज्ञानी न तो ज्ञेयों से आविष्ट होता है और न ज्ञेय ही ज्ञान में प्रविष्ट होते हैं। फिर भी ज्ञानी बिना इन्द्रियों की सहायता के अशेष जगत को जानता है। जो जानता है वह ज्ञान है। ज्ञान के योग से आत्मा ज्ञायक नहीं है। आत्मा ही स्वयं परिणमन करता है।

OPPO A53 · ©ADITYA
2021/06/26 11:09

50

जीव ही ज्ञान रूप है या ज्ञान जीव रूप है और ज्ञेय भूत, भविष्यत और वर्तमान है। जो ज्ञान सप्रदेशी, मूर्त अमूर्त अतीत अनागत आदि सबको जानता है, उसी ज्ञान को अतीन्द्रिय कहते हैं।
इन्द्रिय सुख के साधन इन्द्रिय ज्ञान को हेय बतलाते हुए लिखा गया है कि इन्द्रिय के विषय स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण और शब्द रूप पौद्गलिक द्रव्य है। इनको भी इन्द्रियाँ एक-एक करके जानती हैं फिर वे इन्द्रिय पररूप है आत्मरूप नहीं है। उनके द्वारा जो ज्ञान होता है उसे आत्मा का प्रत्यक्ष ज्ञान कैसे कह सकते हैं। जो पर की सहायता से ज्ञान होता है उसे परोक्ष कहते हैं और जो केवल जीव के द्वारा जाना गया है उसे प्रत्यक्ष कहते हैं। ऐसा ज्ञान ही सुख रूप होता है। अतः केवल ज्ञान सुख स्वरूप है।
जैसे सूर्य स्वभाव से ही तेजस्वी और उष्ण होता है उसी प्रकार सिद्ध परमेष्ठी भी ज्ञान स्वरूप और सुख स्वरूप होते हैं।

इन्द्रिय सुख सम्पन्नों में सर्वोपरि देवताओं को भी दुःखी बतलाकर लिखा गया है कि जो सुख पर की सहायता से प्राप्त होकर पुनः दूर जाता है, कर्मबन्ध का कारण है घटता बढ़ता रहता है ऐसा इन्द्रियों से प्राप्त होनेवाला सुख दुःख रूप ही है यह सुख शुभोपयोग से प्राप्त होता है।

अतः सभी इन्द्रिय, शुभ मोह, आत्म, पुण्य पाप द्रव्य आदि कुन्दकुन्द स्वामी ने प्रथम अधिकार ज्ञान में बतलाया है और तीर्थंकर के आत्मज्ञान ज्ञान में विस्तार रूप से विवेचन किया है।

OPPO A53 · ©ADITYA
2021/06/26 11:09